।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य
स्तवविंशति

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य-स्तवविंशति

प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

मिति-चैत्र शुक्ल १ शुक्रवार नवसम्वत्सर

वि. सं. २०७३ निम्बार्काब्द ५०११

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
फोन नं0 - 01497 -227831

प्रथमावृत्ति--१०००

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
दश रुपये

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

समर्पणम्

श्रीमद्धंसं कुमारांश्च देवर्षिं नारदं भजे।
निम्बार्कं मनसा नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम्।।
श्रीहरिव्यासदेवञ्च शास्त्रविज्ञं जगद्गुरुम्।
परशुरामदेवाख्यं सिद्धिमन्तं सदा भजे।।
मदीयगुरुदेवञ्च प्रणम्य मनसा गिरा।
श्रीस्तवविंशति श्रेष्ठा त्वत्पदाब्जे समर्प्यते।।

समर्पकः-
त्वत्पदाम्भोजमकरन्दकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

शुभ मिति :- चैत्र शुक्ल १ शुक्रवारः
वि. सं. २०७३ नववर्षः, दिनांकाः ८/४/२०१६

दिव्यशक्तिसम्पन्न जगद्गुरु श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य

ब्रह्म एवं परमात्मा नाम से अभिहित होने वाले भगवान् ने हंसावतार धारण करके सत्सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। जगत् में जीवात्मा भगवान् की त्रिगुणात्मिका प्रकृति या माया के बन्धन से त्रस्त रहता है। करुणावरुणालय भगवान् अवतार ग्रहण करके अपने सदुपेदश से वह मार्ग उपदिष्ट करते हैं जिससे जीवात्मा अपने परम कल्याण को प्राप्त कर सके। भगवान् हंस ने सनकादिकों को भक्ति मार्ग का उपदेश किया। यह उपदेश नारद एवं भगवान् निम्बार्क के द्वारा भूलोकवासी मानवों को प्राप्त हुआ। निम्बार्क परम्परा के सभी आचार्यों ने राधामाधव के युगल की एकनिष्ठ भक्ति का आश्रय लिया। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि चार प्रकार के साधकों में ज्ञानी भक्त मुझे प्रिय हैं क्योंकि उसे मैं अत्यधिक रूप से प्रिय हूँ--

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिविशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। गीता-७/१७

भगवान् कहते हैं कि सहस्रों साधक सिद्धि के लिए यत्न करते हैं किन्तु कोई बिरला ही महात्मा मुझे समझता है। वह तत्त्वतः जानने वाला ज्ञानी बहुत से जन्मों के अन्त में यह जान पाता है कि वासुदेव ही सर्वोत्तम सब कुछ है। ऐसे दुर्लभ

निम्बार्क आचार्य परम्परा में श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज हस्तेड़ा में प्रकट हुए।

निम्बार्क आचार्य परम्परा का यह दृढ निश्चय है कि परमात्मस्वरूप श्रीराधा-माधव की कृपा भक्ति मार्ग से प्राप्त हो सकती है। (भक्त्या मामभिजानाति-गीता १८/५५) भगवान् का भी आदेश है कि मन से मेरे भक्त बनो, मेरा यजन करो, मुझे नमन करो तुम निश्चय ही मुझे प्राप्त हो जाओगे यह मैं तुम्हें प्रतिवचन दे रहा हूँ--

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।। गीता-१८/६५)

श्रीकृष्ण कहते हैं कि पराभक्ति (निकुञ्ज भक्ति) से ही तुम मुझे प्राप्त करोगे। पराभक्ति में लीन रहने वालों से भिन्न कोई भी मुझे प्रिय नहीं है और न होगा--

भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि।।

गीता १८/६८-६९

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज ने आचार्य परम्परा के इस मर्म को आत्मसात् किया था तथा जीवन पर्यन्त हरिनाम स्मरण एवं जपसाधना में निरत रहे। आपका जन्म भी पूज्य

गुरुदेव श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के वंश में ही हुआ। आपश्री विक्रम संवत् १९२८ से वि. सं. १९६३ तक आचार्यपीठ पर विराजमान रहे।

आपश्री के समय आचार्यपीठ पूर्ण वैभव से सम्पन्न था। जोधपुर, बीकानेर, बून्दी आदि राज्यों में बड़े समारोह पूर्वक आपकी पधरावनी अनेक बार भव्य एवं वैभव सम्पन्न हुई। ऐहिक वैभवों के होते हुए भी त्रिगुणात्मिका माया के बन्धन में आप नहीं आए अतः आपश्री निरन्तर श्रीमद्भागवत श्रवण वैष्णव सेवा में तत्पर रहते थे। युगलसेवा से वे माया को पार कर गए थे जैसा कि भगवान् ने गीता में कहा है--

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।। गीता ७/१४

निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्यों में यह भी परम्परा रही है कि भागवत का पाठ या श्रवण निरन्तर बना रहे, क्योंकि भागवत समस्त पुराणों का तिलक है, वैष्णवों का परमधन है, इसमें ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की त्रिवेणी प्रकट हुई है। इस पुराण का श्रवण करते हुए, पठन करते हुए और परमात्मा की भक्ति में लीन होकर विचार करते हुए मनुष्य भव बन्धन से मुक्त हो जाता है। भगवत्कृपा का फल स्वयं को तथा अपने भक्तों को प्राप्त हो-इसके लिए ही आचार्यश्री नित्य भागवत श्रवण में तत्पर रहते थे।

पूर्वाचार्यों की अनवरत साधना, स्वयं के भागवत श्रवण, हरिनाम के फलस्वरूप आचार्यश्री में दिव्यशक्तियाँ प्रत्यक्ष प्रकट थी। आपश्री का दिव्य कृपा के अनेक प्रसङ्ग प्रसिद्ध है। उनमें से एक "मालाराम चाड़" (गूजर) का प्रसिद्ध प्रसङ्ग है। मोतीपुरा ग्राम निवासी मालाराम अति निर्धन था। भेड़-बकरियाँ चरा कर अपना पेट पालता था। घर में पत्नी और एक विधवा पुत्री थी। कोई पुत्र सन्तान नहीं थी। एक दिन आचार्यपीठ के पण्डित श्रीरामधनजी तथा श्रीलक्ष्मीनारायणजी बोरायडा व्यास यजमानवृत्ति करते हुए उधर से निकले। मालाराम ने अपना दुःख व्यक्त किया। पण्डितों ने इसका उपाय बतलाया कि आचार्यश्री की पधरावनी कराकर चरण पूजन करके आशीर्वाद ग्रहण करो। भगवान् श्रीसर्वेश्वर की कृपा से सभी मनोरथ पूरे होंगे। किन्तु मालाराम ने निवेदन किया कि मैं तो निर्धन, दीन-हीन हूँ। महाराजश्री की पधरावनी का सौभाग्य तो बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के लिए भी बहुत दुर्लभ है। पण्डितों ने आश्वस्त करते हुए कहा कि भगवान् शबरी और विदुर के भी पधारे थे। अतः एक बार निवेदन करके देखो। मालाराम ने कहा मैं हृदय से चाहता हूँ कि महाराजश्री मेरे घर को पवित्र करें तथा आशीर्वाद प्रदान करें। तब पण्डितों ने कहा हम महाराजश्री से निवदेन करेंगे। अवसर पाकर पण्डितों ने महाराजश्री को प्रार्थना की कि आपकी बस्ती में एक निर्धन गूजर रहता है उस पर आपकी कृपा हो जावे तो वह धन्य हो जायेगा। महाराजश्री ने

आज्ञा प्रदान कर दी। मालाराम ने हर्षित होकर पग-पाँवडा पूर्वक पधरावनी कर चरण पूजन किया यथाशक्ति भेंट कर आरती उतारी। आरती करते समय उसके हाथ काँपने लगे और आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। महाराजश्री ने इसका कारण पूछा। तब पण्डितों ने कहा कि इसके पुत्र सन्तति का अभाव है। महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा-भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा हुई तो एक क्या सात पुत्र होंगे। महाराजश्री का आशीर्वाद फलीभूत हुआ। मालाराम के सात पुत्र हुए। महाकवि कालिदास ने कहा है कि ''न हीश्वर व्याहृतय: कदाचित् पुष्णन्ति लोके विपरीतमर्थम् '' (दिव्य शक्ति सम्पन्न महात्माओं का वचन पूर्णतः अर्थवान् होता है)। आचार्यश्री के आशीर्वाद से ये सभी सम्पन्न हैं तथा आचार्यपीठ के प्रति श्रद्धालु हैं।

रिड़ के राठी परिवार ने भी आचार्यश्री की पधरावनी कराई और दस हजार कलदार चाँदी के रूपयों की चबूतरी बनवाकर उस पर आपश्री को विराजित किया और वह धन राशि भेंट की। उसी राशि से श्रीराधामाधवजी का चांदी का विशाल भव्य सिंहासन (बङ्गला) बनवाया गया। इसी प्रकार आपके समय में पीसांगण राजाजी ने पुत्र कामना पूर्ण होने पर राजकुमार का चोटी जडुला और राजभोग आदि किया।

महाराजश्री ने अपनी वाक् सिद्धि से भक्तों के मनोरथ पूर्ण किए हैं इसी के लिए महाकवि भवभूति ने कहा है कि

''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' (ऋषित्व से सम्पन्न महात्माओं के वचन के अनुसार ही अर्थ–क्रिया या फल होता है)। श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी की चरण पादुकाएँ आचार्यपीठ में विद्यमान हैं।

श्रीराधामाधव के युगल की चरण सेवा में सतत निरत रहने वाली आचार्य परम्परा के प्रति जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी अपने श्रद्धा सुमन काव्य रचना के माध्यम से प्रकट करते हैं। महाराजश्री की यह परम पुनीत काव्यात्मक वाणी हम सभी भक्तों के हृदय में उल्लास और भक्ति का सञ्चार करें यही इस अकिञ्चन की प्रार्थना है।

श्री 'श्रीजी' महाराज का कृपापात्र–
निम्बार्कभूषण **डॉ. दूलीचन्द शर्मा** साहित्याचार्य
मुरलीपुरा (जोबनेर) वास्तव्य
प्राचार्य–श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
जि. अजमेर (राजस्थान)

मिति चैत्र सुदि प्रतिपदा शुक्रवार
नवसम्वत्सर वि. सं. २०७३, दिनांक ८/४/२०१६

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का

परम पावन चरित

भारतवर्ष देवदुर्लभ अतिसुरम्य धराधाम पर अनन्तकोटि ब्रह्माण्डाधिपति सर्वनियन्ता सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् की दिव्य प्रेरणा से भगवदीय पार्षद ही आचार्य स्वरूप से प्रकट होकर अनादिवैदिक सनातन वैष्णव धर्म का प्रचुर प्रचार-प्रसार करते हैं एवं जिससे सत्पथ विभ्रान्तजनों को भागवत धर्म का परिज्ञान हो सके।

उन्हीं सर्वेश्वर प्रभु के नित्य दिव्य पार्षदों में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरण-देवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज थे।

आप आचार्यश्री का दिव्य चरित इतना अनुपम है, जिसका परिवर्णन करना अतिशय दुष्कर कार्य है। वस्तुतः आपश्री का मङ्गलस्वरूप ही जन-जन को उद्बोधन प्रदायक है। आचार्यश्री के विविध सुन्दरातिसुन्दर चरित का यहाँ प्रस्तुतिकरण अति अशक्य है।

परमाचार्य जगद्गुरुवरेण्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज वि. सं. १९२८ से वि. सं. १९६३ पर्यन्त निम्बार्काचार्यपीठ को सुशोभित किया आपश्री के कार्यकाल में अनेक कार्य सम्पादित हुए। आचार्यपीठ एवं निम्बार्कतीर्थ सरोवर

परिसर में नव निर्माण तथा जामून, अनार, करोंदा, विशाल लम्बायमान चमेली के वृक्ष और विविध कुसुमित चमेली-चम्पा आदि लताओं का आरोपण किया। आपश्री का सरल सौम्य स्वभाव सभी भगवद्भक्तजनों को आकृष्ट किए हुए था। सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् की दैनिक सेवा करना, श्रीमन्त्रराज का जाप आदि सदाचरण का चिरस्मरणीय चर्या थी। सन्त सेवा, अतिथि अभ्यागत जनों की उनके अनुकूल व्यवस्था आचार्यश्री के संकेत मात्र से की जाती थी।

एक समय का चमत्कारपूर्ण प्रसङ्ग है कि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के पश्चिम भाग में ''मोतीपुरा'' नामक ग्राम है। वहाँ एक मालाराम गूजर रहता था, भेड़-बकरी समूह को चराने का कार्य करता था। एक दिन सहसा निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) निवासी पं. श्रीरामधनजी एवं पं. श्रीलक्ष्मीनारायणजी बोरायडा व्यास भ्रमण करते हुए ''मोतीपुरा'' ग्राम के समीप पहुँच गये, वहाँ पर मालाराम गूजर से मिलना हुआ चर्चा के प्रसङ्ग में उसने कहा कि भगवान् की कृपा से सब प्रकार से आनन्द है पर मेरे भाग्य में कोई पुत्र नहीं है, अतः इसी का मुझे दुःख है।

दोनों व्यास महानुभावों ने कहा कि किसी प्रकार की चिन्ता मत करो, आचार्यश्री की घर पर पधरावनी कराओ, उनके आशीर्वाद से तेरा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा। उनके इस प्रकार कहने पर आचार्यश्री की अपने घर पर उसने पधरावनी कराकर अपनी भावना प्रकट की।

आचार्यश्री के आशीर्वाद स्वरूप उसके ७ (सात) पुत्र हुए, मालाराम गूजर कृतार्थ होगया। परमाचार्यवर श्रीघनश्याम-शरणदेवाचार्यजी महाराज की जय-जयकार करने लगा।

इस प्रकार आपकी अनेक अद्भुत घटनाएं है, अनेकों के मनोरथ पूर्ण हुए हैं। जो सदा सर्वदा चिरस्मरणीय रहेंगे। अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीगोपीश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज के आपश्री परम कृपापात्र पट्टशिष्य थे। उनके अन्तर्धान होने पर वि. सं. १९२८ में आप श्रीनिम्बार्काचार्य पीठासीन हुए। अतः आपश्री का पाटोत्सव आश्विन शुक्ल कृष्ण ६ (षष्ठी) को प्रतिवर्ष आचार्यपीठ में सम्पन्न होता है।

''निम्बार्क सम्प्रदाय एवं निम्बार्काचार्यपीठ-परिचय'' ग्रन्थ में एवं आचार्यपीठ द्वारा सञ्चालित ''श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय'' के वर्तमान प्राचार्य निम्बार्कभूषण श्रीदूलीचन्दजी शास्त्री साहित्याचार्य के इसी प्रस्तुत ग्रन्थ जो आचार्यश्री का संक्षिप्त व सुगभ चरित दिया गया है, उससे सम्यक् प्रकार से परिज्ञान स्वाभाविक है।

अतः इस आलेख का केवल स्मरण मात्र ही अवलोकनीय है।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

शुभ मिति :- चैत्र शुक्ल १ शुक्रवार
वि. सं. २०७३ नववर्ष दिनांक ८/४/२०१६

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

मङ्गलाचरणम्

(१)

श्रीराधामाधवं वन्दे सर्वेश्वरं पुनः पुनः।
सुरवृन्दैः समाराध्यं सद्भिर्नित्यं समर्चितम्।।

(२)

श्रीहंस-सनकाद्यांश्च वन्दे देवर्षिनारदम्।
श्रीनिम्बार्कं निवासञ्च हरिव्यासं जगद्गुरुम्।।

(३)

परशुरामदेवञ्च जगद्गुरुवरं भजे।
प्रणम्य शास्त्रमर्मज्ञं बुधैश्च परिसेवितम्।।

(४)

श्रीस्तवविंशतिर्ज्ञेया सर्वलोकहितावहा।
सश्रद्धं तन्यते चारु तथ्यपूर्णा च भक्तिदा।।

श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य दशश्लोकी

(१)

श्रीघनश्यामदेवञ्च शरणान्तं सुशान्तिदम्।
श्रीसर्वेश्वरसेवायां तत्परं देशिकं भजे।।

अनन्त श्रीविभूषित निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज जो समस्त भगवज्जनों को सुख-शान्ति प्रदान परायण, सनकादिसेवित श्रीसर्वेश्वर प्रभु की नित्य सेवा में सर्वदा तत्पर, ऐसे परमाचार्यवर का सश्रद्ध भजन करते हैं।।१।।

(२)

असीमवैभवाधीशं पीठाचार्यं जगद्गुरुम्।
शान्तिकान्तिधरं वन्दे घनश्यामं सुदेशिकम्।।

अनन्त वैभव जिनके समीप सर्वदा रहते हैं दिव्य शान्ति और अनिर्वचनीय कान्ति को धारण करने वाले परमाचार्य जगद्गुरुवरेण्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज की अभिवन्दना करते हैं।।२।।

(३)

राधामाधवपदाम्भोजे दिव्यभावपरायणम्।
नमामि श्रीघनश्याम-देवाचार्यं हरिप्रियम्।।

संस्कृत रससिद्ध महाकवि गीतगोविन्दकार श्रीजयदेव के द्वारा परिसेवित श्रीराधामाधव भगवान् के युगलचरणारविन्दों में दिव्य भावनिष्ठ तथा श्रीहरि के परम प्रिय श्रीघनश्यामशरण-देवाचार्यजी महाराज को नमन करते हैं।।३।।

(४)

निम्बार्कतीर्थवामाग्र-भागे पादपरोपणे।
अतीवकुशलं वन्दे श्रीघनश्यामदेशिकम्।।

''पद्मपुराण'' वर्णित श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर के दक्षिण भाग में जिन्होंने वृक्षारोपण किया, ऐसे सर्वपूज्य आचार्यवर्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं।।४।।

(५)

दिव्य श्रीचरणाम्भोजं श्वेताभवस्त्रधारिणम्।
प्रणमामि घनश्यामदेवाचार्यं यशस्विनम्।।

सुन्दर सफेद वस्त्र को धारण करने वाले परम यशस्वी श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज के परम दिव्य श्रीचरणारविन्दों में प्रणाम अर्पित करते हैं।।५।।

(६)

ऊर्ध्वपुण्ड्रधरं दिव्यं गोपीचन्दनचर्चितम्।
तुलसीकण्ठिकारम्यं घनश्यामं भजे वरम्।।

गोपीचन्दन से परम सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक को धारण

किये हुए और तुलसी की कमनीय कण्ठी से शोभायमान श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज का प्रतिदिन भजन-स्मरण करते हैं।।६।।

(७)

गौड़विप्रकुले जातं गौरवर्णाङ्गसंयुतम्।
श्रीघनश्यामदेवञ्च परमाचार्यमाश्रये।।

गौड़ विप्र कुल में प्रकट हुए और जिनका मंगलमयवपु गौर वर्ण से युक्त है, ऐसे परमाचार्यवर्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज का आश्रय लेते हैं।।७।।

(८)

मन्दिरं दर्शनार्थञ्च व्रजन्तमुषसि शुभे।
श्रीघनश्याममाचार्यं वन्दे प्रणतिपूर्वकम्।।

सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु के अतिशय दिव्य मन्दिर में सुभग प्रभातवेला में पधारते हुए आचार्यवर्य श्रीघनश्यामशरण-देवाचार्यजी महाराज की प्रणति पूर्वक अभिवन्दना करते हैं।।८।।

(९)

विविधैः साधुभिः पूज्यं विपश्चिद्भिश्च सेवितम्।
श्रीघनश्यामदेवं हि जगद्गुरुवरं भजे।।

अनेक सन्तजनों द्वारा जिनकी अर्चना की जाती है एवं उत्तमोत्तम विद्वज्जनों द्वारा परिसेवित जगद्गुरुवरेण्य श्रीघनश्याम-शरणदेवाचार्यजी महाराज का नित्यशः भजन करते हैं।।९।।

(१०)

श्रीप्रसादप्रदाने च प्रवीणं नित्यशो मुदा।
ईदृशं परमाचार्यं प्रणमामि पुनः पुनः।।

विविध रूप से भगवत्प्रसाद को भगवज्जनों हेतु प्रतिदिन अतीव हर्षोल्लास के साथ प्रदान करने में बड़े कुशल ऐसे आचार्यवर्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज को बारम्बार प्रणाम करते हैं।।१०।।

(११)

घनश्यामदशश्लोकी प्रेमाभक्तिप्रदायिका।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।

प्रेमाभक्ति को प्रदान करने वाली श्रीघनश्यामशरणदेवा-चार्य दशश्लोकी जिसका प्रणयन उन्हीं के कृपाप्रसाद से यहाँ प्रस्तुत है।।११।।

श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य दशश्लोकी

(१)

श्रीघनश्यामदेवञ्च पीठाचार्यं नमात्यहम्।
सर्वेश्वरस्य सेवायां समारूढञ्च नित्यशः।।

महर्षिवर्य श्रीसनोदिकों के द्वारा संसेव्य दक्षिणावर्ती चक्रांकित गुञ्जाफल सूक्ष्म विग्रह शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु जो परवर्ती पूर्वाचार्य द्वारा परिपूजित रहे हैं उनकी नित्य सेवा में संलग्न ऐसे अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज को अभिनमन करते हैं।।१।।

(२)

राधामाधवसत्सेवासंलग्नं विधिपूर्वकम्।
श्रीघनश्यामदेवं वन्दे निम्बार्कदेशिकम्।।

वैदिक विधिपूर्वक श्रीराधामाधव भगवान् की सेवा में सदा तत्पर श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वर आचार्यवर्य श्रीघनश्यामशरण-देवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की अभिवन्दना करते हैं।।२।।

(३)

निम्बार्कतीर्थभुभाग विहरन्तं हृदा भजे।
पादपकुञ्जपुञ्जस्थितं सेव्यं स्वपार्षदैः।।

अपने निजी सेवापरायण परिचारकों के द्वारा सेवित एवं लताकुञ्जों के मध्य में विराजमान और पद्मपुराण में वर्णित श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर के निकट पावन धरा पर विहार करते हुए श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज को अपने अन्तर्मानस से सदा सर्वदा भजन करते हैं।।३।।

(४)

श्रीघनश्याममाचार्यमुर्ध्वपुण्ड्रसुशोभितम्।
तुलसीकण्ठिकाहृद्यं भावये सद्भिराञ्चितम्।।

गोपीचन्दन से ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण किये हुए अतीव शोभायमान और तुलसी कण्ठी को धारण करने से जो परम सुन्दर लग रहे हैं। सन्त-महात्माओं के द्वारा परिपूजित आचार्यवर्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज को अपने हृदय में धारण करते हैं।।४।।

(५)

प्रभोराराधने नित्यं प्रीतिभावपरायणम्।
गोपालमन्त्रजापे स्थितमाचार्यमाश्रये।।

श्रीसर्वेश्वर भगवान् की आराधना में प्रतिदिन भक्ति भावपूर्ण रूप से सदा सेवारत एवं श्रीगोपालमन्त्रराज के जप करने में सदा लगे हुए श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के युगलचरणारविन्दों का आश्रय लेते हैं।।५।।

(६)

शरणान्तं घनश्यामं देवाचार्यं विभावये।
प्रभुप्रसाददातारं मन्दस्मितशुभाननम्।।

श्रीसर्वेश्वर श्रीराधामाधव के प्रसाद को प्रदान करने वाले सदा प्रसन्न मुखारविन्द ऐसे श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की हम भावना करते हैं।।६।।

(७)

कदम्ब-कदली-जम्बू पादपनीरदायकम्।
आचार्यप्रवरं वन्दे सुख-शान्तिप्रदं भजे।।

कदम्ब, केला, जामुन आदि वृक्षों को जल प्रदान में तत्पर और परमानन्द दिव्य शान्ति प्रदान करने में अतिकुशल आचार्यप्रवर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का भजन करते हैं।।७।।

(८)

गो-विप्ररक्षकं नित्यं साधुसेवापरायणम्।
यमुना-जाह्नवीनीरपाने रतञ्च भावये।।

गोमाता, विप्रवर्ग के सदा पोषक और सन्त सेवा में तत्पर तथा गंगा-यमुना के निर्मल जल का सेवन करने में अभिरत ऐसे श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज को अपने अन्तःकरण में धारण करते हैं।।८।।

(९)

श्रीजगद्गुरुवरं देवं निम्बार्कपीठसंस्थितम्।

श्रीमच्छ्रीजीघनश्यामं परमाचार्यमाश्रये।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज जो दिव्य रजत सिंहासन पर विराजमान उनका हम आश्रय किंवा अवलम्ब लेते हैं।।९।।

(१०)

प्रभाते नित्यशो नौमि श्रद्धया मनसा गिरा।

श्रीघनश्याममाचार्यं विद्वद्भिः परिसेवितम्।।

प्रतिदिन प्रभातवेला में मन और वाणी से श्रद्धापूर्वक श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज जो कि अनेक विद्वज्जनों के द्वारा परिसेवित है। उनको हम अभिनमन करते हैं।।१०।।

(११)

घनश्यामदशश्लोकी गुरुभक्तिप्रदायिका।

राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।

गुरुभक्ति को प्रदान करने वाली यह श्रीघनश्याम दशश्लोकी जिसकी मञ्जुल रचना इन्हीं आचार्यप्रवर के द्वारा प्रस्फुरित हुई है। जो सभी के लिए हितप्रद होगी।।११।।

(६)

शरणान्तं घनश्यामं देवाचार्यं विभावये।
प्रभुप्रसाददातारं मन्दस्मितशुभाननम्।।

श्रीसर्वेश्वर श्रीराधामाधव के प्रसाद को प्रदान करने वाले सदा प्रसन्न मुखारविन्द ऐसे श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की हम भावना करते हैं।।६।।

(७)

कदम्ब-कदली-जम्बू पादपनीरदायकम्।
आचार्यप्रवरं वन्दे सुख-शान्तिप्रदं भजे।।

कदम्ब, केला, जामुन आदि वृक्षों को जल प्रदान में तत्पर और परमानन्द दिव्य शान्ति प्रदान करने में अतिकुशल आचार्यप्रवर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का भजन करते हैं।।७।।

(८)

गो-विप्ररक्षकं नित्यं साधुसेवापरायणम्।
यमुना-जाह्नवीनीरपाने रतञ्च भावये।।

गोमाता, विप्रवर्ग के सदा पोषक और सन्त सेवा में तत्पर तथा गंगा-यमुना के निर्मल जल का सेवन करने में अभिरत ऐसे श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज को अपने अन्तःकरण में धारण करते हैं।।८।।

(९)

श्रीजगद्गुरुवरं देवं निम्बार्कपीठसंस्थितम्।
श्रीमच्छ्रीजीघनश्यामं परमाचार्यमाश्रये।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज जो दिव्य रजत सिंहासन पर विराजमान उनका हम आश्रय किंवा अवलम्ब लेते हैं।।९।।

(१०)

प्रभाते नित्यशो नौमि श्रद्धया मनसा गिरा।
श्रीघनश्याममाचार्यं विद्वद्भिः परिसेवितम्।।

प्रतिदिन प्रभातवेला में मन और वाणी से श्रद्धापूर्वक श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज जो कि अनेक विद्वज्जनों के द्वारा परिसेवित है। उनको हम अभिनमन करते हैं।।१०।।

(११)

घनश्यामदशश्लोकी गुरुभक्तिप्रदायिका।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।

गुरुभक्ति को प्रदान करने वाली यह श्रीघनश्याम दशश्लोकी जिसकी मञ्जुल रचना इन्हीं आचार्यप्रवर के द्वारा प्रस्फुरित हुई है। जो सभी के लिए हितप्रद होगी।।११।।

पीठ पुरी पर बजत बधाई।
परमाचारज श्रीघनश्याम, शोभा अतिशय दरश भलाई।।
भावुक गुणिजन मुदित निजान्तर, सुभग बजावत प्रिय सहनाई।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अनुपम वितरत मधुर मिठाई।।१।।

आज बधाई मंगल गावो।
कुसुमित माला सुरभित लेकर, आचारज प्रिय कण्ठ धरावो।।
पुलकित जनता जय जय बोलत, श्रीचरणों को घर पधरावो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, कृपा होत ही पुष्प बरषावो।।२।।

घनश्याम श्रीआचारजवर।
बधाई गावो आज सुभगदिन,
सब मिलि पुनि२ पुलकित होकर।।
श्रीचरणों का ध्यान धरत ही, बहत सुधा की धार मनोहर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, हरषित होवत तीरथ परिकर।।३।।

वाद्य बजावत भावुक परिकर।
प्रात होत ही नानाविध प्रिय, सुरभित माला लावत बुधवर।।
जयति सदा जय भावुक उचरत, श्रीघनश्याम पद रज पाकर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, धन्य सदा हम पीठ धरा पर।।४।।

(१)

श्रीघनश्यामशरणवर, देवाचार्य महान्।
अतुलित महिमा आपकी, "शरण" सुख शान्ति प्रदान।।

(२)

परम दयालु आप हैं, प्रभजत श्रीहरि नाम।
शरणागत रक्षक सदा, "शरण" सदा निष्काम।।

(३)

निम्बारक आचार्यवर, जपत मन्त्र का जाप।
श्रीघनश्यामशरणपद, "शरण" नशत सन्ताप।।

(४)

सर्वेश्वर सेवा निरत, राधामाधव ध्यान।
जगद्गुरु आचार्यवर, "शरण" करहु गुण गान।।

(५)

तुलसी माला कराम्बुज, जपत सदा प्रभु नाम।
श्रीमद घनश्यामशरण, "शरण" पदाब्ज प्रणाम।।

(६)

प्रतिदिन आवत भक्तजन, करत सश्रद्ध प्रणाम।
श्रीचरणों का ध्यान कर, "शरण" सुमंगल नाम।।

(७)

बलिहारी हरिनाम की, जपत मिलत प्रभु धाम।
जगद्गुरु उपदेश है, "शरण" तभी विश्राम।।

(८)

निमारकतीरथ धाम में, चलकर करो प्रणाम।
जगद्गुरु आचार्यवर, "शरण" कृपालु ललाम।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

१. प्रातःस्तवराज
२. श्रीयुगलगीतिशतकम्
३. उपदेश - दर्शन
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः
६. श्रीराधामाधवशतकम्
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम्
८. हिन्दु-संघटन
९. भारत-भारती-वैभवम्
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम्
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्
१४. भारत कल्पतरु
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्
१६. विवेक-वल्ली
१७. नवनीतसुधा
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम्
१९. श्रीराधाशतकम्
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम्
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम्
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्
२४. छात्र-विवेक-दर्शन
२५. भारत-वीर-गौरव
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः
२७. परशुराम-स्तवावली
२८. श्रीराधा-राधना
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम्
३१. श्रीराधामाधवरसविलास
३२. गोशतकम्
३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः
३४. स्तवमल्लिका
३५. श्रीरामस्तवावली
३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्
३७. दिव्यचरितप्रभा
३८. प्रेरणाशतकम्
३९. उद्गारशतकम्
४०. श्रीपीताम्बरदशश्लोकी
४१. श्रीयुगलस्तववल्ली
४२. श्रीस्तवाराधना
४३. श्रीनिम्बार्कवेदान्ततत्त्वदर्शिका
४४. श्रीस्तवोपासना
४५. श्रीधन्वन्तरिकृपाष्टकम्
४६. श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य-स्तवविंशति
४७. श्रीपूर्वाचार्य-स्तवावली

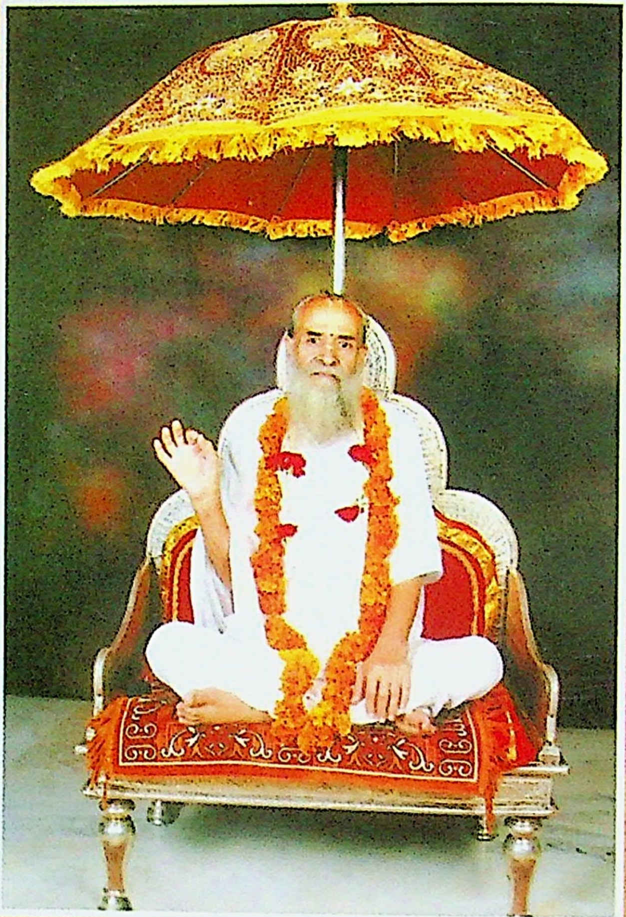

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्र-चूड़ामणि, सर्वतन्त्र - स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क तीर्थ -सलेमाबाद